


सलोकु ॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह
बिनसि जाइ अहमेव ॥
नानक प्रभ सरणागती
करि प्रसादु गुरदेव ॥6॥





असटपदी ॥

जिह प्रसादि छतीह अम्रित खाहि ॥

तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥

जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥

तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥

जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥

तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥


जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना ॥

आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥


जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥

नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥१॥





जिह प्रसादि पाट पट्मबर हढावहि ॥
तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥
जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥
मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥
जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥
मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥
जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥
मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु ॥
प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥
नानक पति सेती घरि जावहि ॥२॥





जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥

लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥

जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥

मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥

जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥


मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥


जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥

मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥


जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥


नानक ता की भगति करेह ॥३॥







जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥
मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥
जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥
मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥
जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥
राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥
जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥
ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥
तिसहि धिआई जो एक अलखै ॥
ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥४॥







जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान ॥
मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥
जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥
जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥
जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥
सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति
जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥
गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥







जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥
जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥
जिह प्रसादि बोलहि अम्रित रसना ॥
प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥
जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥
जिह प्रसादि स्मपूरन फलहि ॥
जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥
जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥
ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥
गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥





जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥
तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥
जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥
रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥
जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥
तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥
जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥
रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥
जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥
नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥





आपि जपाए जपै सो नाउ ॥
आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥
प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥
प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥
प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ ॥
प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥
सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥
आपहु कछू न किनहू लइआ ॥
जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥
नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥

